राम स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण-भव-भय दारुणं ।

नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद-कंजारुणं ।।

कंदर्प अगणित अमित छबि, नव नील नीरद सुंदरं ।

पट-पीत मानहु, तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ।।

भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य-वंश निकंदनं ।

रघुनंद आनँद-कंद कोसलचंद दसरथ-नंदनं ।।

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु, उदार-अंग विभूषणं ।

आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ।।

ईति वदति तुलसीदास, शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं ।

मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल गंजनं ।।